डा0 बी0 आर0 ए0 राजकीय महिला स्ना0 महा0, फतेहपुर

03–07–2020

रिपोर्ट

''देखो अपना देश'' की श्रृंखला के अन्तर्गत आज 'भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक आयाम'' विषय पर **वेबिनार** का आयोजन

डा0 बी0 आर0 ए0 राजकीय महिला स्ना0 महा0, फतेहपुर के **एक भारत श्रेष्ठ भारत प्रकोष्ठ** के तत्वाधान में **''देखो अपना देश'' के अन्तर्गत वेबिनार की श्रृंखला के आयोजन** में आज **''भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक आयाम''** विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का शुभारम्भ सरस्वती वन्दना की प्रस्तुति सुश्री सोनम वर्मा, महाविद्यालय छात्रा के द्वारा डांस फार्म के रूप में की गयी । महाविद्यालय प्राचार्य एवं पैटर्न डा0 अपर्णा मिश्रा के द्वारा मुख्य अतिथि डा0 महेन्द्र राम, पूर्व निदेशक उ0 शि0 उ0 प्र0 एवं विशिष्ट अतिथि डा0 एस0 पी0 खरे, पूर्व संयुक्त निदेशक उ0 शि0 उ0 प्र0 तथा समस्त आगन्तुको का स्वागत करते हुये वेबिनार के आज के विषय पर चर्चा करते हुये कहा कि भारतीय संस्कृति के प्रत्येक क्रिया कलाप को विज्ञान के स्तम्भों से ही सवारा गया है। भारतीय संस्कृति के अध्ययन एवं विष्लेशण से पता चलता है कि पूर्व काल में शास्त्रों और संहिता के माध्यम से ही खगोल, चिकित्सा एवं अन्य विज्ञान की धाराओं में प्रयोग होने वाले विन्दुओं को संकलित किया जाता था। वर्तमान भारतीय संस्कृति उन्ही प्राचीन तथ्यों पर आधारित है अतः ये कहना विलकुल सही है कि भारतीय संस्कृति के तथ्य विज्ञान के तथ्यों की कसौटी पर खरे उतरते हैं उन्होने प्रतिभाग कर रहे विभन्न प्रदेशों से जुडे मुख्य वक्ता एवं तमाम रिसोर्स परसनस को वेबिनार में सम्मिलित होकर अपने ज्ञान के प्रवाह से सराबोर करने के संकल्प की सराहना की। वेबिनार की विषय वस्तु डा0 रमेश बाबू, संयोजक ने प्रस्तुत करते हुए भारतीय संस्कृति विभिन्न प्रकार की क्रिया कलापों का समूह है जो इस संस्कृति के भविष्य को निर्धारित करते है। इन क्रिया कलापों में भारत में रहने वालों के धार्मिक और समाजिक अनुष्ठान, त्योहार तथा तमाम प्रकार के संस्कार है, और इससे संबन्धित समस्त प्रकार के साधन भी है। इन साधनों के बनावट और प्रयोग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना भी इसके चिरकालिक बने रहने की क्षमता को दर्शाता है। आज का विषय इन्ही सब बातों पर श्रोताओं एवं दर्शकों की मूल भावना को अहलादित करने के प्रयास का एक क्रम है। कार्यक्रम की आर्गेनाईजिंग सेकेटीरी डा0 प्रतिमा गुप्ता एवं संचालन का कार्य डा0 रेखा वर्मा ने किया। मुख्य अतिथि डा0 महेन्द्र राम, पूर्व निदेशक उ0 शि0 उ0 प्र0 ने भारतीय संस्कृति के विज्ञान पर आधारित होने की बात कही। उन्होने बिन्दुवार भारतीय संस्कृति के कई विधाओं की चर्चा करते हुये कहा कि वेद वैज्ञानिक दृष्टि के समूल उदाहरण है। उन्होने तमाम उदाहरण देते हुये इस विषय की सार्थकता के सिद्ध होने की बात कही। आज के उद्धाटन सत्र की मुख्यवक्ता प्रो0 अनीता गोपेश, जन्तु विज्ञान विभाग, केन्द्रिय विश्वविद्यालय इलाहाबाद, प्रयागराज ने भारतीय संस्कृति में बरगद, पीपल, आवले के पेड के नीचे एकादशी का महत्व एवं नदियों में स्नान एवं आरती का महत्व भी विज्ञान से जुडा है। उन्होने भारतीय संस्कारों में प्रयोग किये जाने वाली तमाम विधियों के विज्ञान से पुष्ट होने की बात कही। आज के कार्यक्रम के विशेष अतिथि डा0 एस0पी0 खरे संयुक्त निदेशक उ0 शि0

उ0 प्र0 ने भारतीय संस्कृति में दैनिक जीवन में प्रयोग किये जाने वाले क्रिया कलापों, कर्म विधियों एवं अनुष्टानों एवं धार्मिक संस्कारों के विज्ञान के तथ्यो पर आधारित होने की बात कही। भारतीय कला से बने तमाम उदाहरण जैसे जन्तर–मन्तर एवं अन्य पौराणिक इमारतों को विज्ञान के तथ्यों से निर्मित किये जाने के बात कही। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के एरोस्पेस इंजीनियरिंग कानपुर के प्रोफेसर एवं वर्तमान में भारतीय तकनीकी शिक्षण प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान कोलकता के निदेशक डा0 देबी प्रसाद मिश्रा ने भारतीय संस्कृति के ग्रंथों के श्लोकों के माध्यम से विज्ञान के कई उदाहरणों को प्रस्तुत किया। डा0 सरिता गुप्ता ने आये हुये सभी अतिथियों के वेबिनार में सम्मिलित होने एवं उनके द्वारा दिये उद्बोधन के लिये धन्यवाद दिया। प्रथम तकनीकी सत्र में डा0 पी0एन0 डोगरे प्राचार्य के0एन0पी0जी0 कालेज ज्ञानपुर भदोही ने प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में दिये विज्ञान के कई उदाहरण प्रस्तुत किये। उन्होने कहा कि पंच महाभूतों के अतिरिक्त भारतीय ग्रन्थों में आत्मा एवं मन को भी महाभूत कहा गया है। कई वर्तमान वैज्ञानिक नियमों के बारे में प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में दिया गया है। उनके अनुसार भारतीय आयुर्वेद भी इस विज्ञान की गंगा का अहम हिस्सा है। इस सत्र के दूसरे वक्ता श्री निकोलस मार्वे अंग्रेजी विभाग नानजस्टोईन कालेज मेधालय ने मेधालय की प्रकृतिक स्थिति के कारण यहा की संस्कृति में विज्ञान के तमाम तथ्यों को सम्मिलित किया गया है। इस सत्र की चेयर परसन डा0 गुलसन सक्सेना ने सभी सम्मिलित रिसोर्स परसन एवं प्रतिभागियो को घन्यवाद दिया। द्वितीय तकनीकी सत्र के रिसोर्स परसन श्री रूबेनकर नानग्रुम ने पूर्वोत्तर राज्यों में क्षेत्रिय स्तर पर काम करने वाली सरकार यानि गांव की पंचायत के वैज्ञानिक तरीके से काम करने के तरीके को विस्तार से रखा। वेबिनार की पैटर्न एवं महाविद्यालय प्राचार्य डा0 अपर्णा मिश्रा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आज का विषय के चयन के माध्यम से देश के यूवाओं को प्राचीन भारतीय संस्कृति से परिचय कराने का प्रयास है और इन्ही सब बातों पर वार्ता एवं गहन चर्चा की आवष्यकता है। इस सत्र में डा0 शकुन्तला ने सभी आगन्तुको को धन्यवाद देते हुये सत्र के सारगर्भित विचार रखे। इस अवचर पर महाविद्यालय परिवार के समस्त प्राध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्राचार्य